



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद वेदाङ्ग का अध्ययन

प्रो.नन्द किशोर
शिक्षक शिक्षा विभाग
केन्द्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा, महेंद्रगढ़
वर्षा चौधरी
एम.एड शोधार्थी, संजय टी.टी. कॉलेज जयपुर
Email: nandkishor@cuh.ac.in, Mobile: 9779031210

First draft received: 15.11.2025, Reviewed: 18.11.2025
Final proof received: 21.11.2025, Accepted: 28.11.2025

सारांश

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल आधार वेद माने जाते हैं, जिहें अपौरुषेय तथा सनातन ज्ञान का स्रोत कहा गया है। वेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं, अपितु उनमें दर्शन, विज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षा, नैतिकता तथा जीवन-मूल्यों का समन्वित ज्ञान निहित है। वेदों की शुद्ध समझ एवं संरक्षण हेतु वेदाङ्गों की परम्परा विकसित हुई। वेदाङ्ग वेदों के सहायक शास्त्र हैं, जो वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण, अर्थ, प्रयोग तथा काल निधारण में सहायक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में वेदों एवं वेदाङ्गों की अवधारणा, संरचना, उद्देश्य तथा समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा, वेद, वेदाङ्ग, शिक्षा, संस्कृति आदि।

शैक्षिक प्रासंगिकता

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक प्रासंगिकता निम्न बिंदुओं में स्पष्ट होती है—

1. **मूल्य-आधारित शिक्षा:** वेद एवं वेदाङ्ग सत्य, ऋत, धर्म, कर्तव्य, अनुशासन एवं नैतिकता पर आधारित शिक्षा प्रदान करते हैं, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली की मूल आवश्यकता है।
2. **समग्र शिक्षा दृष्टि:** वेदों में आध्यात्मिक, बौद्धिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक ज्ञान का समन्वय मिलता है, जो समग्र मानव विकास की अवधारणा को सुदृढ़ करता है।
3. **भाषिक एवं बौद्धिक विकास:** व्याकरण, निरुक्त और छन्द जैसे वेदाङ्ग भाषा-शुद्धता, तार्किक चिंतन एवं बौद्धिक अनुशासन को विकसित करते हैं।
4. **वैज्ञानिक चेतना का विकास:** ज्योतिष, शुल्कसूत्र, आयुर्वेद एवं गणितीय अवधारणाएँ भारतीय ज्ञान परम्परा की वैज्ञानिक दृष्टि को प्रमाणित करती हैं।
5. **संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना:** वेद-वेदाङ्ग भारतीय संस्कृति, सभ्यता और पहचान के मूल आधार हैं, जिनका अध्ययन विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गर्व एवं राष्ट्रीय चेतना विकसित करता है।

6. **NEP-2020 से सामंजस्य:** नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम में समाहित करने पर बल दिया गया है; यह अध्ययन नीति के क्रियान्वयन हेतु सैद्धान्तिक आधार प्रदान करता है।

7. **शिक्षक शिक्षा में उपयोगिता:** शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वेद-वेदाङ्गों का अध्ययन शिक्षकों को भारतीय शैक्षिक दर्शन से जोड़ता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदों के स्वरूप, संरचना एवं महत्ता का समग्र अध्ययन करना।
2. वेदाङ्गों (शिक्षा), व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष एवं कल्पकी अवधारणा, उद्देश्य एवं कार्यक्षेत्र का विश्लेषण - करना।
3. वेद एवं वेदाङ्गों की पारस्परिक संबद्धता तथा वेदार्थबोध - में उनकी भूमिका को स्पष्ट करना।
4. वैदिक साहित्य संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् (के शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक योगदान का अध्ययन करना।

5. भारतीय शिक्षा परम्परा वेदाङ्गों –में वेद (गुरुकुल प्रणाली) की भूमिका का विवेचन करना।
6. समकालीन शिक्षा व्यवस्था एवं नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के संदर्भ में वेदवेदाङ्गों की प्रासंगिकता का – मूल्यांकन करना।
7. मूल्यआधारित-, समग्र एवं सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ शिक्षा के निर्माण में वेदवेदाङ्गों की उपयोगिता को रेखांकित – करना।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद एवं वेदाङ्गों से संबंधित साहित्य अत्यन्त व्यापक एवं बहुविषयक है। विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए अध्ययनों का संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित है—

शुक्ला (2015) ने भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक विकास का विवेचन करते हुए वेदों को भारतीय सभ्यता की बौद्धिक एवं नैतिक नींव बताया है। उनके अनुसार वेद सामाजिक संगठन, शिक्षा तथा जीवन-दृष्टि के मूल स्रोत हैं।

राधाकृष्णन (2009) ने भारतीय दर्शन की व्याख्या में वेदों एवं उपनिषदों को केन्द्रीय स्थान दिया है। उन्होंने वेदों को आध्यात्मिक चेतना का स्रोत मानते हुए यह स्पष्ट किया कि वैदिक ज्ञान केवल धार्मिक नहीं, बल्कि दार्शनिक एवं नैतिक भी है।

शर्मा (2018) ने भारतीय शिक्षा के इतिहास पर अपने अध्ययन में गुरुकुल प्रणाली में वेद एवं वेदाङ्गों की भूमिका का विस्तृत वर्णन किया है। उनके अनुसार शिक्षा, व्याकरण और छन्द जैसे वेदाङ्गों ने भाषा-शुद्धता एवं बौद्धिक अनुशासन को सुदृढ़ किया।

मिश्र (2016) ने वेदाङ्ग साहित्य के विश्लेषण में यह प्रतिपादित किया कि वेदाङ्ग वेदों की समझ के लिए अनिवार्य सहायक शास्त्र हैं। उन्होंने निरुक्त एवं व्याकरण को वैदिक भाषा की कुंजी बताया है।

पाण्डेय (2020) ने भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा के समन्वय पर अपने शोध में कहा है कि वेद एवं वेदाङ्ग मूल्य-आधारित शिक्षा के सशक्त माध्यम हैं, जिन्हें समकालीन पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए।

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) से संबंधित अध्ययनों में यह तथ्य उभरकर आया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा, विशेषतः वेद एवं वेदाङ्ग, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

उपरोक्त साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि वेद एवं वेदाङ्गों पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध है, तथापि भारतीय ज्ञान परम्परा के समग्र संदर्भ में उनकी शैक्षिक एवं समकालीन प्रासंगिकता पर और अधिक व्यवस्थित अनुसंधान की आवश्यकता है। यही अंतराल प्रस्तुत अध्ययन का आधार है।

वेदों का स्वरूप एवं महत्ता

अनादिनिधना नित्या वागुस्त्वा स्वयंभुवा। आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वः प्रवृत्तयः ॥

वेद अपौरुषेय हैं जो विश्व शांति, विश्वबंधुत्व, विश्व कल्याण एवं सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान के प्रथम उद्घोषक ग्रंथ हैं। भारतीय सनातन परंपरा में आदिकाल से ज्ञानविज्ञान का विशाल भंडार - संहिताओं में ही सुरक्षित रहा है। वेदों की ये संहिताएँ चार हैं।

1. ऋग्वेद संहिता

2. यजुर्वेद संहिता
3. सामवेद संहिता
4. अथर्ववेद संहिता

समाजशास्त्र, शिक्षा, नैतिकता तथा जीवनमूल्यों का समन्वित - ज्ञान निहित है। वेदों की शुद्ध समझ एवं संरक्षण हेतु वेदाङ्गों की परम्परा विकसित हुई। वेदाङ्ग वेदों के सहायक शास्त्र हैं, जो वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण, अर्थ, प्रयोग तथा काल निर्धारण में सहायक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में वेदों एवं वेदाङ्गों की अवधारणा, संरचना, उद्देश्य व समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृति एवं सभ्यता की आत्म वैदिक संहिताएँ भारतीय और विश्व साहित्य के भी आदि स्रोत हैं। सनातन संस्कृति की मनीषा वेद वाणी को सृष्टि के आदि में स्वरूपं उपरामात्रा से उत्सृष्ट मानती है, जो नित्य, अविनाशी और दिव्य है, जिससे सभी प्रवृत्तियों का आविर्भाव हुआ है-

अनादिनिधना नित्या वागुस्त्वा स्वयंभुवा । आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वः प्रवृत्तयः ॥

वेद अपोरुषेय हैं जो विश्व शांति, विश्वबंधुत्व, विश्व कल्याण एवं सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान के प्रथम उद्घोषक ग्रंथ हैं। भारतीय सनातन परंपरा में आदिकाल से ज्ञानविज्ञान का विशाल भंडार - संहिताओं में ही सुरक्षित रहा है। वेदों की ये संहिताएँ चार हैं। 1. ऋग्वेद संहिता, 2. यजुर्वेद संहिता, 3. सामवेद संहिता एवं 4. अथर्ववेद संहिता। इनमें ऋग्वेद को ज्ञानकांड का, यजुर्वेद को कर्मकांड का, सामवेद को उपासनाकांड का और अथर्ववेद को विज्ञानकांड का शास्त्र माना गया है। समस्त संस्कृत वांग्मय एवं विचारों का उत्स वेदों में ही सुरक्षित होने से वेदों को सभी विद्याओं का आदि मूल माना गया है-वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। अर्थात् मनुष्य के सभी कर्तव्याकर्तव्यों का निर्देश वेदों से ही प्राप्त हुआ है। महर्षि मनु ने वेदों को सर्वज्ञानमय और सभी विद्याओं का आदि स्रोत माना है-

यः कञ्चित् कस्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तिः । स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः ॥ 26

भारतीय संस्कृति के प्रसिद्ध विद्वान् एवं महान् क्रांतिकारी लोकमान्य बालांगाधर तिलक ने हिंदुत्व अथवा सनातन धर्मविलंबी होने के मुख्य लक्षण के रूप में वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है-

प्रामाण्य बुद्धिवैदेषु ।

महर्षि पतंजलि ने महाभाष्य में षडंग वेदों का अध्ययन ब्राह्मण का निष्कारण धर्म बतलाया है-ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च ।"

महर्षि मनु भी वेदाध्ययन को ही विप्र के परमतप के रूप में निर्धारित करते हैं-

वेदमेव सदाऽभ्यस्येत तपस्तप्यन् द्विजोत्तमः । वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते ॥

कक्षप्रातिशाखा में विष्णुमित्र ने वेद का अर्थ करते हुए कहा है कि जिन ग्रंथों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुर्ष्य का बोध, ज्ञान एवं प्राप्ति संभव है, वही वेद हैं-विचंते ज्ञानंते तथ्यंते एभिर्वर्मादिपुरुषार्था इति- ॥

आचार्य सायण ने वेद शब्द को परिभाषित करते हुए कहा है - इष्टप्राप्य निष्परिहास्वोरलौकिक उपायं यो ग्रंगो बेदयति-, स वेदः। अर्थात् जो ग्रंथ इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार का

अलौकिक उपाय बताने में समर्थ हो, वही वेद है। विश्व संस्कृति के ऐतिहा को समझने के लिए वेदों का अनुशीलन अनिवार्य है, क्योंकि मानव की आदिम सभ्यता एवं संस्कृति के बीज वैदिक मंत्रों में ही सुरक्षित हैं।

वेदों में भारतीय दार्शनिक परंपरा-, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अध्यात्म, योग, आयुर्वेद, गणित, भौतिकी, रसायन, अर्थशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र आदि समस्त विद्याओं का आरंभिक स्वरूप विद्यमान है। महर्षि याज्ञवल्क्य सभी शास्त्रों की उत्पत्ति सनातन वेदों से मानते हैं-

न वेदशास्त्रादन्यतु किञ्चिच्छाखं हि विद्यते । निः सृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात् सनातनात् ॥

आचार्य भरत मुनि के अनुसार देवताओं की प्रार्थना के आधार पर ब्रह्मा ने ऋग्वेद से पाठ्य अर्थात् संवाद, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस तत्व को लेकर पंचम वेद के रूप में 'नाट्यवेद' की रचना की है-

**जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च ।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानार्थर्वणादपि ॥**

केवल इतना ही नहीं; नाट्यवृत्तियाँ भी वेदों से ही उद्भूत हुई हैं। नाट्यशास्त्र के वर्णन के अनुसार ऋग्वेद से भारतीयवृत्ति, यजुर्वेद से सात्त्वीवृत्ति, सामवेद से कैशिकीवृत्ति और अथर्ववेद से आरभटीवृत्ति उत्पन्न हुई है-

ऋग्वेदाद् भारती क्षिप्ता यजुर्वेदाच्च सात्त्वी । कैशिकी सामवेदाच्च शेषा चार्थर्वणादपि ॥

आचार्य सावण ने वेदों को विशुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिपादक ग्रंथ सिद्ध किया है। आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म, कर्म, मोक्ष आदि का जो ज्ञान लौकिकशास्त्रों में प्राप्त नहीं हो सकता, वह प्रामाणिक रूप से वेदों में विस्तार से वर्णित है। इसी रूप में वेद का वेदत्व सिद्ध है-

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते । एतं विदंति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदताऽ ॥

महर्षि मनु वेद, स्मृति, सदाचार और सभी के प्रति आत्मानुकूल व्यवहार को धर्म के चतुर्विध लक्षण के रूप में प्रतिपादित करते हुए वेदों को परम-प्रमाण के रूप में स्थापित करते हैं-

वेदः स्मृतिः सदाचारः, स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्॥ धर्मं जिज् *जासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥*

वैदिक साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के परमवैभव का निर्दर्शन होता है। प्राचीन भारतीय कृषि, वाणिज्य आदि से संबद्ध सामग्री वेदों में पुष्कल मात्रा में उपलब्ध है। अथर्ववेद में व्यापार की सफलता के आवश्यक गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया हैशुनं नोऽस्तु चरितमुत्पितं च। अर्थात् व्यापार की सफलता के -लिए दो गुण परमावश्यक हैं

1. चरितचरित्र की शुद्धि एवं व्यवहार कुशलता।-

2. उत्थितश्रम-, दृढ़ निश्चय और उत्साह।

वेदों में राजा, सप्ताङ्ग एवं प्रजा के कर्तव्यों का विस्तार से वर्णन है। भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक विकास के आदि स्रोत को जानने के लिए वेदों का अध्ययन परमावश्यक है।

मानव की सभ्यता के संपूर्ण विकास को जानने के लिए तुलनात्मक भाषा विज्ञान का अत्यंत महत्व है। इस दृष्टि से भी पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने बहुत विस्तार से वेदों का उपयोग

किया है। इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए आचार्य सायण, महर्षि दयानंद, योगी अरविंद, पंमधुसू .दन ओझा, श्रीपाद दामोदर सातव लेकर, वासुदेवशरण अग्रवाल, मैक्समूलर, रुडॉल्फ रोठ, विल्सन, प्रिफिथ और मैकडॉनल आदि विद्वानों ने अपना संपूर्ण जीवन वेद के अध्ययन एवं शोध में समर्पित कर दिया।

ब्राह्मण ग्रंथ

मूल वैदिक संहिताओं के पश्चात उनके यज्ञपरक कर्मकांडीय मंत्रों का आध्यात्मिक आधिदैविक और वैज्ञानिक स्वरूप स्पष्ट करने वाले ग्रंथों को ब्राह्मण ग्रंथ केरूप में जाना जाता है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ब्रह्मन शब्द के 'मंत्र' और के वाष्प-विषयों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जिन ग्रंथों में मंत्रों का निर्वचन, यज्ञ यो अर्थ हैंब्रह्म वै मंत्रः ब्रह्म यज्ञः। वाचस्पति - ग्रंथों विविध यज्ञों में उनका विनियोग-मिश्र ने ब्राह्मण, उनका प्रयोजन, अर्थवाद और विधि का वर्णन होता है, वे ग्रंथ ब्राह्मण ग्रंथ कहलाते हैं-

नैरुक्तयं यत्र मंत्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् । प्रतिष्ठानं विधिश्वेव ब्राह्मणं तदिहोच्यते ॥

मीमांसा दर्शन के भाष्यकार शबरस्वामी ने इन्हीं विषयों को और व्यापक रूप से स्पष्ट करते हुए ब्राह्मण ग्रंथों के दस प्रतिपाद्य विषय बताए हैं-

हेतुर्निर्वचनं निंदा प्रशंसा संशयो विधिः । परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारणकल्पना । उपमान-० दशैते तु विघ्यो ब्राह्मणस्य वै ॥

हेतुर्यज्ञ में प्रतिपादित कर्तव्यों का कारण बताना-, निर्वचनशब्दों - की निरुक्ति स्पष्ट करना, निंदायज्ञ में निषिद्ध कर्मों की निंदा - करना, प्रशंसायज्ञ में विहित कार्यों की प्रशंसा करना-, संशययज्ञ - से संबंधित सदेहों का निवारण करना, विधियज्ञीय क्रियाकलापों - की विधि का क्रमशः विवरण प्रस्तुत करना, परक्रियापराहित - वाले कर्तव्यों का वर्णन करना, पुराकल्पयज्ञीय विधि के समर्थन - में किसी प्राचीन आख्यान का वर्णन करना, व्यवधारण कल्पना- समसामयिक परिस्थिति के अनुसार कार्य की व्यवस्था करना, उपमानविषय को पुष्ट -विषयानुकूल उपमा के आधार पर वर्ण्ण- करना। ब्राह्मण ग्रंथों में इन सभी विषयों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

इन विषयों का वर्णन करते हुए ब्राह्मण ग्रंथकारों ने अध्यात्म, नीति, आचार, विज्ञान, भूगोल, कृषि, व्यापार, वाणिज्य, राजनीति, ज्यामिति और गणित आदि पर पर्याप्त प्रकाश डाला है, जो भारतीय प्रज्ञा का अप्रतिम उदाहरण है। ये ब्राह्मण ग्रंथ सभी वैदिक संहिताओं पर लिखे गए हैं, जिनमें से आज कुछ ही उपलब्ध हैं-

-ऋग्वेद (क)1 ऐतरेय ब्राह्मण और .

2. शांख्यायन ब्राह्मण। (कौशीतकि)

-शुक्ल यजुर्वेद (ख)1शत .पथ ब्राह्मण ।-कृष्ण यजुर्वेद (ग)1 . तैत्तिरीय ब्राह्मण।

-सामवेद (घ)12 ब्राह्मण (तांड्य अथवा प्रौढ़) पंचविंश .. षड्विंश ब्राह्मण

3. सामविधान ब्राह्मण 4. आर्षय ब्राह्मण 5. देवताध्याय ब्राह्मण 6.

मंत्र 7 ब्राह्मण (उपनिषद्). सहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंश ब्राह्मण

9. ब्राह्मण 10. जैमिनीय ब्राह्मण (आर्षय) जैमिनीय (तलवकार)

11. जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण। (छांदोग्य)

-अथवेद (ङ)१गोपथ ब्राह्मण। .

आरण्यक ग्रंथ

आरण्यक ग्रंथ, ब्राह्मण और उपनिषदों के वर्णविषयों के मध्य - सेतु के रूप में स्थित हैं। आरण्यकों में ब्राह्मण ग्रंथों में प्रतिपादित -यज्ञों की अध्यात्मिक मीमांसा प्रस्तुत की गई है। इसी अध्यात्म मीमांसा का विकसित स्वरूप उपनिषदों में प्राप्त होता है। इसे 'रहस्यविद्या-' के रूप में भी जाना जाता है। आचार्य सायण के अनुसार अरण्य में इन ग्रंथों का पठनपाठन होने से इन्हें - अरण्यक की संज्ञा प्राप्त हुई है।

अरण्याध्ययनादेतद् आरण्यमितीर्यते ।।

अरण्ये तदघीयीतेवं वाक्यं प्रवक्ष्यते ॥।

महाभारत के अनुसार आरण्यक ग्रंथ वेदों के सारभूत हैं। जिस प्रकार दही से मक्खन, मलयपर्वत से चंदन और औषधियों से अमृत तत्व प्राप्त होता है, उसी प्रकार वेदों से आरण्यक प्राप्त हुए हैं-

नवनीतं यथा दधो मलयाच्वंदनं यथा। आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा ॥।

वर्तमान में ऋग्वेद से संबंधित ऐतरेय और शांखायन आरण्यक, शुक्लयजुर्वेद से संबंधित बृहदारण्यक, कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणीय शाखा का मैत्रायणीय आरण्यक एवं सामवेद से संबंधित जैमिनिशाखा का तलवकार आरण्यक। इस रूप में संप्रति केवल आरण्यक ग्रंथ उपलब्ध 6 होते हैं।

उपनिषद् (वेदांत)

साहित्य उपनिषद ही है। उपनिषद वेद का ज्ञानकांड है, जो अध्यात्म विद्या अथवा भारतीय ज्ञान परंपरा में वेदों के पश्चात अध्यात्म विद्या का सर्वोक्तृष्ट और प्रामाणिक ब्रह्मविद्या के नाम से जाना जाता है। वेदों का अंतिम भाग होने के कारण इसे वेदांत तथा उपसविनय स्थिति अर्थात् -निश्चय से सद्-समीप में नित्यज्ञान के लिए गुरु के समीप सविनय उपस्थिति उपनिषद् कहा जाता है। आचार्य शंकर ने सद् धातु के बद्दल विशरणगत्यवसादनेषु इन अर्थों के आधार पर अविद्या का नाश, दुखों का निरोध तथा ब्रह्म की प्राप्ति रूप तीन अर्थों के संग्रह के रूप में उपनिषद् शब्द को सिद्ध किया है।

वैदिक ज्ञान के चरम सिद्धांत एकमेवाद्वितीय ब्रह्म, नेह नानास्ति किञ्चन का प्रतिपादन कर उपनिषद् विश्व को अध्यात्म का सर्वोच्च संदेश प्रदान करते हैं। वेदांत संप्रदाय की प्रस्थानत्रयी में, श्रुतिप्रस्थान के रूप में उपनिषदों को वेदों के समान ही महत्व प्राप्त है। कठोरपनिषद् में कहा गया है-

सर्वं वेदा यत्पदमामनंति तपांसि सर्वाणि च यद्वदंति । यदिच्छंतो ब्रह्मचर्य चरंति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥**

उपनिषदों के महत्व को बिना किसी भेदभाव के सभी दार्शनिकों एवं विद्वानों ने स्वीकार किया है। उपनिषदों की सार्वभौम मान्यता की सिद्धि इसी बात से हो जाती है कि मुगल सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह ने उपनिषदों की महत्ता से प्रभावित होकर उनका फारसी में अनुवाद कराया। इस अनुवाद का फ्रेंच भाषा में अनुवाद हुआ। उस फ्रेंच भाषा में हुए अनुवाद का लैटिन भाषा में अनुवाद किया गया, जिस लैटिन अनुवाद को पढ़कर प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक शॉपेनहाफर कह उठता है" -In the whole world, there is no study so elevating as that of the Upanishads. It has been the solace of my life. It will be the solace of my death." मैक्समूलर ने भी शॉपेनहाफर

के इन्हीं शब्दों का समर्थन करते हुए कहा है" -If these words of Schopenhauer required any confirmation, I would willingly give it as a result of my life & long study."

Philosophy of the Upanisads नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखने वाले पॉल डायसन ने भी उपनिषद् साहित्य को विश्व में अतुलनीय कहासी प्रकार उपनिषदों में प्राप्त तत्वमसि", अहं ब्रह्मास्मि", प्रज्ञानं ब्रह्म, अयमात्मा ब्रह्म ये चार महावाक्य भारतीय दर्शन के आधार हैं। इस रूप में भारतीय अध्यात्म विद्या के चरम स्रोत उपनिषदों का महत्व निर्विवाद रूप से सर्वातिशायी है।

षड्वेदांग

वेद के तत्वार्थ और उसमें प्रतिपादित विषयों के सम्यक अनुशीलन हेतु जो ग्रंथ सर्वाधिक सहायक माने जाते हैं, उन्हें वेदांग कहा जाता है। यहाँ अंग शब्द का तात्पर्य ही स्वरूप बोधक उपकारक तत्वों से है-अ-डग्यंते ज्ञानते एभिरिति अङ्गानि। व्याकरण महाभाष्य के प्रणेता महर्षि पतंजलि ने षडंग वेदाध्ययन की अनिवार्यता को ब्राह्मण का निष्कारण धर्म माना हैब्राह्मण-क्योंकि वेद मंत्रों "निष्कारणो धर्मः षडंगो बेदोऽध्येयो ज्ञेयश्चेति । के उच्चारण, उनकी विशुद्ध व्याख्या, यज्ञों में उनका विनियोग तथा काल निर्धारण के लिए वेदांगों का अत्यंत महत्व है। ये वेदांग संख्या में छह हैं। शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष तथा कल्पशिक्षा व्याकरण छंदों निरुक्तं ज्योतिषं तथा । कल्पश्चेति - षडङ्गानि वेदस्या हुर्मनीषिणः॥

इन्हीं को षड्वेदाङ्ग के रूप में जाना जाता है। महर्षि पाणिनि ने इन्हें वेद पुरुष के छह अंगों के रूप में व्याख्यायित करते हुए कहा है-

छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽय पठ्यते ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते । शिक्षा ग्राण्तु वेदस्य मुखं व्याकरणं सृतम् तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।

अर्थात् छंदशास्त्र वेद रूपी शरीर के पैर हैं, कल्प हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र हैं, निरुक्त कान हैं, शिक्षा नाक है और व्याकरण मुख है।

1. शिक्षाशिक्षा वह वेदांग है-, जिसके माध्यम से वेद मंत्रों के उच्चारण का ज्ञान प्राप्त होता है। आचार्य सायण के अनुसार जिसके द्वारा स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण को सिखाया जाता है, वह शिक्षा हैस्वरवर्णाद्युच्यावारण प्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते - ग्रंथों में ध्वनि विज्ञान से संबंधित अनेक -शिक्षा "सा शिक्षा। महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं। प्रमुख शिक्षा ग्रंथों में पाणिनीय शिक्षा, भारद्वाज शिक्षा, नारदीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा आदि प्रमुख हैं।

2. व्याकरणव्याकियंते व्युत्पाद्यते शब्दा अनेनेति व्याकरणम् - अर्थात् जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति प्रत्ययों का विवेचन किया जाता है, उसे 'व्याकरण' कहा जाता है। वेदों की सुरक्षा, वेदार्थ के अवबोधन, शब्दसाधुत, प्रकृति प्रत्यय विवेचन एवं उदात्तादि स्वरों के सम्यक ज्ञान में परम सहायक व्याकरण को समस्त वेदांगों में मुख की संज्ञा प्रदान की गई हैमुखं व्याकरणं - सृतम्। प्राचीन प्रतिशाख्य व्याकरण के आदि ग्रंथ हैं।

महाभाष्यकार पतंजलि ने व्याकरण के मुख्य पाँच प्रयोजन बताए हैंवेदों की रक्षा-, ऊह, आगम, लघु एवं असंदेह-रक्षोहागमलब्बसदेहाः प्रयोजनम्। आचार्य पाणिनि द्वारा रचित 'अष्टध्यायी' वर्तमान काल में व्याकरण का प्रतिनिधि ग्रंथ माना जाता है। उसके ऊपर कात्यायन द्वारा रचित 'वार्तिक' एवं महर्षि पतंजलि द्वारा रचित 'महाभाष्य' व्याकरण के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

वैदिक एवं लौकिक शब्दों के सम्यक ज्ञान के लिए व्याकरणशास्त्र का प्रयोग भारत की महनीय मेघा का अप्रतिम उदाहरण है। संसार की समस्त भाषाओं में संस्कृत का व्याकरण अपनी वैज्ञानिक प्रकृति के कारण सर्वोकृष्ट व्याकरण सिद्ध हुआ है।

3. छंद वेदमंत्रों की शुद्धता और उनके छंदों के ज्ञान हेतु-'छंदशास्त्र' की रचना हुई है। पिंगल द्वारा रचित छंदसूत्र इस वेदांग की प्रतिनिधि रचना मानी जाती है। इसमें वैदिक छंदों के साथसाथ लौकिक छंदों-○ का भी विवेचन किया गया है।

4. निरुक्तनिर्वचन। वर्णागम-निरुक्त का अर्थ है-, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश तथा धातु का उसके अधितिशय से योग के ज्ञान द्वारा निरुक्त, वैदिक शब्दों की व्युत्पत्तिमूलक व्याख्या करता है। भाषाशास्त्र की विष्णु से निरुक्त का अतीव महत्व है। संप्रति आचार्य यास्क द्वारा रचित 'निरुक्त' ही उपलब्ध है, जिसमें वैदिक कोश 'निधंटु' की व्याख्या की गई है।

द्वारा रचित 'वेदांग ज्योतिष' इस वेदांग का उपलब्ध प्राचीनतम ग्रंथ है। ज्योतिष की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए आचार्य लगध ने कहा है कि जो व्यक्ति ज्योतिष का ज्ञान नहीं रखता, वह वेद को कभी नहीं जान सकता -**वेदा हि बशार्धमभिप्रवृत्तः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः । तत्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्॥**

6. कल्पजिन ग्रंथों में यज्ञ संबंधी विधियों का प्रतिपादन किया - उन्हें गया है- 'कल्प' कहा जाता है। इसके चार भाग हैं-श्रैतसूत्र-, गृहसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र। श्रैतसूत्रों में श्रुतिप्रतिपादित यज्ञों का क्रमबद्ध विवेचन प्राप्त होता है। गृहसूत्रों में विविध संस्कारों, महायज्ञों एवं उत्सवों आदि का वर्णन किया गया है। धर्मसूत्रों में आचारशास्त्र से संबंधित विवरण उपलब्ध होता है। शुल्बसूत्र विशुद्ध रूप से गणित एवं ज्यामितिशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रंथ हैं। इनमें यज्ञवेदियों के निर्माण एवं मापन की सूक्ष्मतम जानकारी उपलब्ध है।

5. ज्योतिषवेद प्रतिपादित यज्ञों की अनुकूल तिथि एवं नक्षत्र - आदि के सम्यक ज्ञान के लिए 'ज्योतिष' नामक वेदांग की रचना हुई है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख शोध-निष्कर्ष प्राप्त हुए—

1. यह स्पष्ट हुआ कि वेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि समस्त भारतीय ज्ञान-विज्ञान के आदि स्रोत हैं।
2. वेदाङ्गों का विकास वेदों की शुद्ध समझ, संरक्षण एवं व्यवहारिक प्रयोग हेतु अनिवार्य सहायक शास्त्रों के रूप में हुआ।
3. शिक्षा, व्याकरण एवं छन्द ने वैदिक परम्परा में भाषा एवं उच्चारण की शुद्धता सुनिश्चित की।
4. निरुक्त ने वैदिक शब्दों की व्युत्पत्तिमूलक व्याख्या द्वारा भाषाशास्त्रीय आधार प्रदान किया।
5. ज्योतिष एवं कल्प ने यज्ञ, संस्कार एवं सामाजिक जीवन के काल-निर्धारण और विधि-विधान को वैज्ञानिक स्वरूप दिया।
6. ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् ग्रंथों ने कर्म से ज्ञान की ओर तथा बाह्य अनुष्ठान से आन्तरिक साधना की यात्रा को स्पष्ट किया।

7. उपनिषदों में प्रतिपादित ब्रह्मविद्या एवं महावाक्य भारतीय दर्शन के सार्वभौमिक सिद्ध होते हैं।
8. वेद-वेदाङ्गों का अध्ययन भारतीय शिक्षा को मूल्यपरक, संस्कृतिनिष्ठ एवं मानवोन्मुख बनाने में सक्षम है।
9. समकालीन शिक्षा व्यवस्था में वेद-वेदाङ्गों की उपेक्षा से सांस्कृतिक विच्छेदन की स्थिति उत्पन्न हुई है।
10. यदि वेद-वेदाङ्गों को आधुनिक संदर्भ में समाहित किया जाए, तो भारतीय शिक्षा वैश्विक स्तर पर विशिष्ट पहचान प्राप्त कर सकती है।

सन्दर्भ)References)

1. राधाकृष्णन, एस. (2009). भारतीय दर्शन (खंड-1). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. शर्मा, रामनाथ (2018). भारतीय शिक्षा का इतिहास. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
3. शुक्ल, रामचन्द्र (2015). भारतीय संस्कृत का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
4. मिश्र, विद्याधर (2016). वेदाङ्ग साहित्य का इतिहास. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
5. पाण्डेय, जानकीप्रसाद (2020). भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
6. वेदव्यास. **ऋग्वेद संहिता**. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस।
7. वेदव्यास. **यजुर्वेद संहिता**. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस।
8. वेदव्यास. **सामवेद संहिता**. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस।
9. वेदव्यास. **अथर्ववेद संहिता**. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस।
10. पाणिनि. **अष्टाध्यायी**. सम्पा. काशिका वृत्ति सहित. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
11. यास्क. निरुक्त. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।
12. वेदाङ्ग ज्योतिष. सम्पा. सुधाकर द्विवेदी. वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन।
13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. नई दिल्ली।
14. Sharma, R. N. (2019). *Indian Knowledge System and Education*. New Delhi: APH Publishing.
15. Radhakrishnan, S. (2011). *Indian Philosophy*. New Delhi: Oxford University Press.